

बुंमडली कृत विचार का बनाना

वैश्वीकरण :-

- वैश्वीकरण एक अर्थिक प्रणाली है जो दुनिया भर में सामाजिक, धर्माधिकारी, विचारी और लोगों के मुक्त आवाजाई से जुड़ी हुई है।
- अकितयों, सामाजिक, धर्माधिकारी, विचारी और लोकार्थी का एक देश से दूसरे देश तक के व्यापारितण की वैश्वीकरण कहते हैं।
- वैश्वीक दुनिया के निर्माण को समझने के लिए हमें आपार के इतिहास, प्रवासन और लोगों की काम की तरहा और राजधानियों की आवाजाई की समझना होगा।

धन्यवान काल :-

- चातियों, आपारियों, पुजारियों और तीर्थयात्रियों ने खान-खाना अवसर और आद्यात्मिक पूर्वि के लिए था उत्तीर्ण से बचने के लिए विश्वास द्वारा तय की।
- वे अपने सभी सामाजिक, धैर्य, भूल्य, कौशल, विचार, आविष्कार और चैहे तक की गोलाठुरी और लोकार्थी की बोलते थे।
- 3000 डिस्ट्रिक्ट, संघ सक्रिय तटीय व्यापार ने सिंधु धारी की सूखताओं की वर्तमान परिवर्तन घोषिया के साथ जोड़ा।
- राजाम भर्त ने चीन को पाइयम से जोड़ा,
- भोजन ने अस्त्रिका से सम्म धरोप और स्फिया की धारा की।
- लूहत्स चीन से इट्टो की धारा करते हुए स्पैष्टिसी बन गया।

यूरोपीय विजेता अमेरिका में, स्थिरक के रूपानुवादी गण, राष्ट्र बाट प्रत्यंत लिल जोड़े के बाद, अह महाद्वीप में गए हैं तथा गया।

रेशम मार्ग (सिल्क कट)

- सिल्क कट (रेशम मार्ग) एक सीतिहासिक आपार मार्ग था जो कि द्वितीय राजायी ई. च. से १५वीं शताब्दी तक, अह चीन, भारत, फारस, अब्ब, चीन, और इटली की पैदे होइते हुए राजिया के मुमहयसाधारी रेशम आपार के लाभ था। उस दौरान हुए भारी कारब दिया गया था।
- सिल्क भावी : ये मार्ग राजिया को यूरोप और उत्तरी अफ्रीका के साथ साथ विवर को जमीन और समुद्र भारी से जोड़ते थे।

रेशम मार्ग (सिल्क कट) की विवरणात्

- इस सिल्क कट से होकर चीन के बहुत द्वितीय चीजों तक जाते थे,
- इसी प्रकार यूरोप से राजिया तक जाना और चाँदी इसी सिल्क कट से आते थे।
- सिल्क कट के प्रभाव ही इसाई इस्लाम और बौद्ध धर्म राजिया के विविजन भागों में पहुँच पाए थे।
- रेशम मार्ग को रुचिया के खोड़ने वाला अबस महत्वपूर्ण मवस्तु द्वार के हिस्सों को मार्ग माना जाता था।
- अह कट रुचिया के विविजन हिस्सों के बीच आपार जोर मान्य-कृतिक अबद्धों का एक बड़ा स्रोत मानित हुआ।

झोजन की चाला (प्रैदेशिकी और आखु) :-

प्रैदेशिकी :-

- नूडल्स चीन की देन हैं जो वहाँ से दुनिया के दूसरे भागों तक पहुँचा।
- भारत में हम इसके देशी संस्करण सेवियों को बढ़ाव दें इसे बाल्प करते हैं, इसी नूडल का इटलियन, कप की प्रैदेशिकी।
- अंग के कई अम भाषा पदार्थ जैसे आखु, निय ट्माटर, मक्का, सोया, मुङ्गफली और शॉफ्टफॅंड चूरोप में तब आए जब किएटोफू कोलंबियन ने गल्ली और अमेरिकी महाद्वीपी की खोज निकाली।

आखु :-

- आखु के आने से चूरोप के लोगों की जिंदगी भारी में आरोप लदाव आए, आखु के आने के बाद उत्तरी चूरोप के भोज इस रिति ने आ पाए कि बहुत थाना था जिसके और आधिक दिन तक जो भए।

आखरें द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान 1840 के दशक के मध्य के किसी भी मार्ग पर आखु की फसल तबाह हो गई तो कई लाख भोज भूख से मर गए। उस अवधि को आखरिये अवधि के नाम से जाना जाता है,

विजय, भीमारी और आपार :-

अमेरिका की खोज तथा लहूमूल्य धारुल लाला :-

- सोलहवीं सदी में चूरोप के नविकों ने फ्रीजी और अमेरिका के देशों के लिए अचुकी गर्भ खोज ली था। नए समुद्रों मार्ग की खोज जो तभी भी आपार की कृषिकों में जय वी काल्कि नीव थी रखी।

अमेरिका के पास अनियों का अक्षय महार था और इस महाद्वीप में अनाज भी पुनर्व माला था। अमेरिका के अनाज और अनियों के सामान्य के अवश्य माग के लोगों का जीवन पूरी तरह से बदल दिया।

विनियोगों द्वारा चेचक के किटाणुओं का प्रयोग विजय के लिए

- भावधतों सदी के अध्ययन तक पुर्तगाल और फ्रेंच द्वारा अमेरिकी अनिवार्यों की अद्दम शुक्रजात हो चुकी थी। लेकिन युरोपियन का यह जीत किटी हथियार के कारण मंड़वा हो पाई थी।
- युरोप के लोगों पर चेचक का आक्रमण पहले ही हो चुका था इसलिए उन्होंने इस बीमारी के विषापु प्रतिरोधन क्षमता प्रियांत्रित कर ली थी।
- लेकिन अमेरिका तक तक युनियों के अन्य भागों से अलग - अलग था इसलिए अमेरिकियां के द्वारा यह इस बीमारी से छड़ने के लिए प्रतिरोधन क्षमता नहीं थी।
- जब युरोप के लोग वहाँ पहुंचे तो वे अपने साथ चेचक के जीवाणु भी ले गए, इस ना कुद भागों की मृत्यु अवारी माफ कर दी। इस तरह युरोपियन आमानी से अमेरिका पर पौर दासित कर दाए।
- युरोप में अभरण्याहूँ :-
- उनीसली सदी तक युरोप में कई अभरण्याहूँ थीं जिनमें गरीबी, बीमारी और धार्मिक दबाव।
- धर्म के विषापु लोकों वाले कई लोग मरा कर डर से अमेरिका भाग गए थे। उन्होंने अमेरिका में जीवने वाले अवसरों ना की अस्तु इसलिए और इससे उनकी कापी तरक्की हुई।

- अमेरिका की सभी तक भारत और चीन युनियन के भवेद धनों थे उन्होंने करते हुए विकिन पञ्जाबी सभी से ही चीन ने बाहर घासक पट अकुका लगाना कुक किया था और युनियन के बाकी हिस्सों से अण्डा-अम्बा ही गया था।
- चीन के धर्टे प्रभाव और अमेरिका के वहाँ प्रभाव के बाबन विश्व के आपार के कानूनिक धूरोप की तरफ विफ़्ट कर रहा था।

उनीसवी शताब्दी (1815-1914) :-

- उनीसवी सभी में युनियन रेजी से बदल रही थी। इस अवधि में आमाज़िक, राजनीतिक, आर्थिक और तकनीकी के दोनों के बीच पौर्ण विवाद हुए। इन विवादों में अमृतपुरी बदलाव आए।

अर्थव्यापारी मानते हैं कि आर्थिक आयान प्रदान गिन प्रकार के होते हैं जो नियन्त्रित हैं।

- एस प्रबाद :- आपार, मुद्र्य का से बस्तुओं जैसे कपड़ा आ गोदू का।
- श्रम का प्रबाद :- काम का शेखाव जी तबाश में लौगां का यहाँ से बदा भाना।
- पूँजी का प्रबाद :- अब आ थीर्ध अवधि के लिए दूर दिन विश्व अर्थव्यापारी का उद्धयः।

आइए इन तीनों को मनोनी के लिए लिटन की अर्थव्यापारी पर नज़र डालें।

- 18वीं सदी के आखिरी दशक तक लिटन में पांच लों था।
- पांच लों बढ़ जानुन था जिसके अद्दे भरकार में मवाका के असार पर पांच लों लगा थी थी।

[56]

- कुछ दिन लादू किटन में जनसंख्या का बढ़ते व्यापा बढ़ गई जैसे ही जनसंख्या बढ़ी भोजन की मांग के बढ़दे हो गई।
- भोजन की मांग जहाँ तो कूप अस्थारित सामाजिक वृद्धि हो गई।
- इससे पहले की किटन में मुख्यमरी आती, जिसका
- ऐसा कान लोंगों की भाषण कर दिया।
- अस्थारित अलग अलग दश के आपारियों ने किटन में भोजन का नियंत्रण किया।
- भोजन की जड़ी भाजी में बदलाव आया और विकास कान लोंगों के भाषण

- भोजन की मांग बढ़ी
 - जनसंख्या बढ़ी
 - भोजन के दम बढ़ी
- कान लोंगों के लाद
- आपार में वृद्धि
 - विकास का तेज होना
 - भोजन का अधिक मंदार

तकनीक का योगदान :-

- इस दौरान विकस ने जी अधिकावरथा के मुमालों में टेक्नोलॉजी के सभु अदम भूमिका निभाई। इस युग के कुछ मुख्य तकनीकी रूप से रेलवे, स्टीम विप और टेलीफोन हैं।
- रेलवे ने बंदरगाहों और अन्तर्रिक्ष भूमिका की अपार में जोड़ दिया।
- स्टीम विप के कान माल को अटलाइफ के पाठ ले जाना और भूमि में भाग ले जाया।

- ० टेलीग्राफ की सुविधा से संचार अवस्था में तेज़ [57]
 आइ और इमाम आधिक लेन देन बेहतर कर
 कर होने लगा।
- उपनिषदी सदी के आखिर में उपनिषदीवालाद :-
- ० १९८८ तक आपके के लिए ये चुरोप के तोगों
 की भवदगो बेहतर हो गई तो दूसरी तरफ
 उपनिषदी के लोगों पर इसका उत्त प्रभाव
 पड़ा।
 - ० जब अफिका के आधुनिक नवीनी को गोट्टे से
 इयर्सी ने आपको पता चलेगा कि ज्यादातर देशों
 की भीमारं भीषणी रुक्षा में है। ऐसा लगता
 है कि जैसे किसी छात की भीषणी रुक्षा है तो योन्य भी
 हो।
 - ० १८८५ में चुरोप की बड़ी विकियाँ विलिन में स्थित
 और अफिकी महादेव को आपका ने बाँध लिया।
 इस तरह से अफिका के ज्यादातर सभी देशों
 की भीमारं भीषणी रुक्षाओं ने बन गई।
- रिंडरपेस्ट या मवेशी खेज :-
- ० रिंडरपेस्ट खेज जी भौति के लिए वाली मवेशीया
 की बीमारी थी। वह बीमारी १८९० ई. के दशक
 में अफिका में बड़ी तेजी से केली।
 - ० रिंडरपेस्ट या अफिका में आगमन १८४० के दशक
 के आश्वर में हुआ था। यह बीमारी उन धोड़ों
 के साथ आइ हुआ था जो काटथा विद्या से लाल
 गए थे एसा उन इटेलियन अभियां की
 भवद के लिए किया गया था जो पूरी
 अफिका में सरिहिया पर आक्रमण कर रहे थे।
 - ० रिंडरपेस्ट द्वारा अफिका में किसी जंगल की आग
 की तरह फैल गई। १८९२ जाने आते थे
 बीमारी अफिका के परिचयी तट तक पहुँच चुकी
 थी। इस दौरान रिंडरपेस्ट ने अफिका के मवेशीयों
 की आवादी पर १०% दृष्टि लाभ कर दिया।

• अंग्रेजों के लिए अवधियों का गुप्तान दीन
का मतलब था राजी रही पर अतरा।
अब उनके पास आने और बाहानों में
भयहरी करने के अलावा और कोई चाहा
नहीं था। इस तरह से अवधियों की एक
लीमां ने भूमिका जो अंग्रेजों के अपना
उपनिषद अपनी में बदल दी।

भारत के अनुचित शर्मियों का जना :-

• बंधुआ भज्यु : - वैसे भज्यु जो किसी थास
मालिक के सिंह थास अवधि के लिए
आम लोगों को प्रतिबद्ध होते हैं बंधुआ भज्यु
कहसाते हैं,

• आधुनिक विद्या, उत्तर प्रदेश, मध्य भारत और
तमिलनाड़ु के भूखान्त इलाकों से कई गरीब
लोग बंधुआ भज्यु बन गए। इन लोगों
की मुख्य कृप में क्रेतियन आइलेंड मंदिर शाल
और ~~फैज़ी~~ झींजा भेजा गया। कई लोगोंने भी आरं
मलाया भी भेजा गया। भारत में कई बंधुआ
भज्युओं की असम के पाय लागानी के भी आम
पर लगाया गया।

• एंड्रेट अवस्थे बूढ़े वाये करते थे और इन
भज्युओं की थी भी पता गई। ऐसे था कि वे
कहा जा रहे हैं। इन भज्युओं के लिए
नई पश्चात पर बड़ी भयावह स्थिति हुआ जहाँ
थी उनके पास कोई कानूनी आधिकार नहीं थी
और उनके पास कोई विधितियों के कानून
नहीं था।

• 1900 के दशाओं से भारत के राष्ट्रवादी लोग
बंधुआ भज्यु के सिस्टम का विशेष कानून
जगे थे। इस सिस्टम की 1921 की समाप्ति

भारत के नामी बैंक और अवसायियों में शिकारीपुरी शब्द
और जहारकोट्टर्ड, चेटिहमाद का नाम आता है,
वे थोड़ी और लोड़ीय स्थिया को कृषि नियोग
में पूँजी लगाते थे। भारत में और विवर
के विभिन्न भागों में ऐसा भौजन के लिए
उनका अपना ही स्फुरण पर सिस-टम हुआ
करता है।

भारत के अवसायी और मदाखन उपनिवेशी
क्षासों के सम्पर्क अफ़्रिका श्री पॅट्टन नुक्के थे।
हैदराबाद के सम्बद्धी अवसायी ने चुरापियन उपनिवेशी
से श्री जागे निकल गये थे। 1860 के
दशक तक उन्होंने पूरी दुनिया तु भद्रवपुर्ण
लंदरगाहों फालते फूलते रम्पोरियम श्री बना
लिये थे।

भारतीय आपार, उपनिवेशी और वैदिक अवस्था:-

भारत में उम्या फॉटन के कपड़ों का बर्बादी
से चुराप ने नियोग हुए रहा थे। लेकिन
ओधोडीकरण के बाद स्थानीय उत्पादकों ने
छिह्न सरकार को भारत में आने वाले
फॉटन के कपड़ों पर प्रतिबंध लगाने
के लिए लाल्य किया।
इससे फिटन ने बते कपड़े भारत के बाजारों
में आने लगा जो आने लगे।

1800 में भारत के नियोग के 30% दृढ़समा फॉटन
के कपड़ों का था। 1815 में यह निरकर
15% हुए गया और 1870 ओर आते यह 3%
ही रह गया। लेकिन 1812 से 1871 तक
कच्चे फॉटन का नियोग 5% से बढ़कर 35%
हो गया।

- इस शीराज नियंत्रित किए गए भारतीयों के जील (डिग्नी) से तेजी से बढ़ाती हुई।
- भारत से सबले ज्यादा विप्रित होने वाले भारत वा अफिल जो भूमि का क्षेत्री था।
- भारत में ब्रिटेन को कच्चे माल और अनाज ब्रिटेन का नियंत्रित बनने लगा। और ब्रिटेन से हैदराबाद माल का आयात लगा।
- इसमें एक ऐसी प्रियंत्रित आ गई कि अब आपर अधिकारी ब्रिटेन के हित बेपल थे। इस तरह भी आप उपर्युक्त ब्रिटेन के फैवर था।
- भारत के लाजार में जो आमदनी होती थी उभावा विभास ब्रिटेन अन्य उपनिवेशों के लिए बनता था। और भारत के रुपने वाले अपने आंकिस्ट का वर्तन इन के लिए बहुत था।
- भारत के बाहरी कार्य की भवित्व और रितार विद्या अंग्रेज (जो भारत का चारों के अधीक्षण है) का फैवर जो अपने अल था।
- महायुद्धों के बीच अर्थव्यवस्था

- पृथग विवर भूष्य भूमि का से छोड़ने के लड़ा गया था।

- इस अन्य के सौरान, शुभिया ने अधिक, राजनीतिक अद्वितीय और सकृदार्थी द्वयीय चुह्य का अनुमति दिया।
- प्रथम विश्वचुह्य दो गुणों के लिये बड़ा गया था। सकृदार्थ में वास्तविक छोटे, शास्त्र, शास्त्र और वाय ने अमेरिका के वास्तविक हो गए, दूसरे गुण ने वास्तविक भवनी, आस्त्रिया, उंगरी और ओटोमन रुपी।
- यह चुह्य पर्वों तक पहला।

चुह्य कालीन संपादकों :-

- पहले विश्व चुह्य ने मुख्य शुभिया की जही भाष्यनों में अल्फ्झोर को स्वरूप दिया था। लगभग ७० पाँच लोग वाह ६० और २ करोड़ लोग धर्मात्म दो गए।
- मरने वाले भी अपार्विज दीने वाले ने उस उन के बीच जब आदमी अधिक उत्थान करता हुआ, इसे भूमोप की अस्त्रान शरीर पाले कामनाएँ। भारी लाभी हो गई। परिवारों में बेट्ठाने वाले की संख्या कम हो जाने के कारण यही भूमोप में लोगों की अस्त्रान घट गई।
- अस्त्रान उक्तों की चुह्य ने वास्तविक दीने के लिए बाध्य होना पड़ा, लिंगाजा भारतीयों ने अदिलां जान करने लगी। जो जान परंपराएँ जान भी उक्तों की कान भाज जाते थे उन्हें अब अदिलां जान रहे थे।

- इस भूद्य के बाद अनिया की लड़की बड़ी आर्थिक कामितयों के बीच के सम्बंध हुए गए। बिटेन जो भूद्य के कोई उठाने के लिए अमेरिका से काफी लौंगा पड़ा।
 - इस भूद्य में अमेरिका जो एक अन्तर्राष्ट्रीय क्रम से भाग कर अन्तर्राष्ट्रीय बना दिया।
- भूद्योन्तर सुधार
- जब बिटेन भूद्य में अस्ट्रेलिया और भारत के इर्द्दोंग का विकास हुआ।
 - भूद्य के बाद बिटेन की अपना पुराना दण्डना जायम करने में लगी, साथ ही बिटेन पर जापान की रक्षा पर रहा था। भूद्य पर अमेरिका, का भारी चुकाता था।
 - भूद्य के सबसे बिटेन में चीजों की मालिंग में लैजी आई औ लिखाई वहाँ की अर्थभवरथा पल-फूल रही थी। बिटेन भूद्य मालिंग होने के बाद मालिंग में छिपावट आई। भूद्य के बाद बिटेन के 20% जामगारी की अपनी लौकिकी से दस घोना पड़ा।
 - भूद्य के पढ़ते ही भूरोप जीहे का भूद्य नियमित था। बिटेन भूद्य के शीसन पूरी

मुख्य के सभी शासकों द्वारा की गई अधिकारीय कानूनों के लिए अमेरिका और अंड्रेसिया, जिनमें भी गहरी की मुख्य नियतिकृत के बाहर के उभेर, जैसे जैलों की मुख्य अल्प हुआ मुक्ति, मुख्य वर्ष प्रियों से जैल की अपलाई वार्ड कर दी थी, इसका लाला भाजाव और जोगानों की अधिक विधि आ गई, और इसके उत्तराधीन अर्थभवरण की तरवाही आ गई।

महामंथी :-

- महामंथी की शुरुआत 1929 से हुई और यह अंकड़ 30 के दशाल के अध्य तक बना रहा, इस दौरान किसी के ज्ञानात्मक दृष्टि में उत्पादन, रोजगार, उपयोग और आपाव वे बहुत बड़ी विस्तार की गई,
- अद्यता अर्थभवरण बहुत वामपोर हो गई, जोमर्ट लिंगों तो विस्तारों की ओर धूलने लगी और आमदानी बढ़ने के साथ विस्तार अधिक जाता हो उत्पादन करने लगे,
- बहुत भी देखों वे अंगरों से जब लिया,
- अमेरिकी उच्चोरपारियों ने अंगों की आवश्यकता की देखते हुए अंगों की अधिकारीय देखों को फार्म देना बड़े कर दिया,
- देखों जैसे दिवालिया हो गये,

भारत और महाभूमि :-

- 1928 से 1934 के बीच त्रिका ला, आयात नियोग धर कर अधिक रह गया।
- अंतर्राष्ट्रीय बाजार में कीमत छिन्न से भारत के गृह की कीमत 50 प्रतिशत तक बढ़ी गई।
- विदेशों और काश्तकारी को ब्याय लुप्तसन हुआ,
- महाभूमि विद्या बनता हुवं अर्थभवरण के लिए भी हानिकारक।
- 1931 में बंदी चरण सोमा पर भी विस्तीर्ण कारो व्राहीण भारत अस्तोष उत्तर - पूर्व के द्वे से रह गए थे।

विवेक अर्थभवरण का पुनर्निर्माण: चुड़ोत्तर काल

चुड़ा के बाय के अवलोकन:

- द्वितीय विश्व युद्ध पर्व के चुड़ों की तुलना की निष्पुण अभिज्ञा थी। इस युद्ध के आम नागरिक अधिक संख्या में भाग ले गए थे और इस युद्ध के अवधारणा विवरण विवेक युद्ध के बाद की रिकॉर्ड भी यही बातें से मुद्दा ढूँढ़ थीं।
- पश्चिम के अमेरिका का एक प्रबल आर्थिक,

राजनीतिक और आणखी शाकित के काम में
उद्योग ।

- सोवियत युनियन का एक कृषि प्रशान्त अर्थव्यवस्था से विश्व शाकित के काम में परिवर्तन ।
- विश्व के नेताजों की मीटिंग हुई जिसमें युद्ध के बाद के सम्मानित भूम्हारों पर चर्चा की गई । तबदीली यो बातों पर ध्याया उपाय दिया गया था जो नीचे दिया गया है ।
- औद्योगिक देशों में आर्थिक मंत्रलय की वरकार रखना और यह नियमान्वयन ।
- एंडो, लामन और लामवारों के प्रवाल पर वादी, युनियन के प्रमाण की नियंत्रित काम ।

छेटन - युड़स अभियोग :

- 1944 में अमेरिका द्वारा हैम्पशायर के छेटन युड़स लामक व्यान पर मंचुकर साइट की ओर आंद्रिक लंब वित्तीय मंडलीन की सहमति ली गई ।
- इस सहमति के तहत अन्तर्राष्ट्रीय युड़ा कोन और विश्व लोक की स्थापना हुई ।
- छेटन युड़स भवरथ द्वारा विश्वपत वित्तीय द्वारा दर्शाया गया अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक अौद्योगि - NIEO
- स्थापना विकासशील देशों की 1950 और 60

के द्वाकुं के परिचयी अर्थात् रथा के तेज विकास के बाज नहीं हुआ।

- उन्होंने भूमि की रक्त अमृत के लिए में समर्पित किया। इस अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक अद्यता (NIEO) की मांग के लिए 77 था 6-77 का समूह।
- यह रक्त सेरी प्रणाली भी जो उन्हें अपने प्राकृतिक संसाधनों पर आर्थिक विकास अदायता, कच्चे माल के लिए अधिक मूल्य और विकास देशों के बाहरी लैंडटर पहुँच पर आवानों के लिए प्रयान करती,

चीन में भी आर्थिक नीति:

- चीन जैसे देशों के बजारी लद्दुन नम था।
- चीन अर्थात् रथा की कम जागत बालों अपवानों के इसके उत्तराधि की स्थिता का दिया।
- चीन बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के लिए निवास का रक्त पंसदीया, रक्षान वन गया।
- चीन जो भी आर्थिक नीति विवेद अर्थात् रथा को तद में लौट गई, बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ।
- बहुराष्ट्रीय निगम बड़ी कम्पनियाँ हैं जो रक्त के समान कोई देशों में काम करते हैं।

• राजनीति का विषय आपी प्रस्ताव 1950
 तौर पर 1960 के २२१७ में ४० उल्लेखनीय
 विशेषता थी कौशिक तुमिया भर, जो
 अमेरिकी भाषा का प्रस्ताव हुआ था।

• विभिन्न संवकोरों सारा लगात गए उच्च
 आयात की बहुमूल्कीय निपटनी
 अपनी वित्तिज्ञिणी इकाई का
 पता भगाने के लिए अभिवृत किया।
वीट

• एक कानून था निकाय द्वारा किए गए
 प्रस्ताव को अस्वीकार करने का
 अंतर्धानिक आधिकार।

ट्रिप

• एक देश के आयात वा नियात पर
 दुसरे देश द्वारा लगाया जानेवाला कर,
 प्रवेश के बिन्दु पर शुल्क लगाया
 जाता है, अर्थात् भासा वा दण्ड
 अद्वा पर।